International Indexed & Refereed Research Journal, ISSN 0974-2832,(Print)E-ISSN-2320-5474,April- May (Combind),2013 VOL-IV * ISSUE 51-52

शोध पत्र- इतिहास

लार्ड इर्विन और उसके शासनकाल में अपनायी गयी उत्तर पश्चिमी सीमा नीति (1926 ई. से 1931 ई.)

* डॉ. सुनीता सिन्हा

* सहायक परीक्षा नियंत्रक, भगवन्त विश्वविद्यालय, अजमेर

April-May,2013

लार्ड रीडिंग के बाद नियुक्त होकर आए लार्ड इर्विन को अपने वायसराय होने के कार्यकाल में अत्यन्त गंभीर समस्याओं से उलझना पड़ा। इसके शासनकाल में 1927 ई. में प्रसिद्ध साइमन कमीशन की नियुक्ति हुई तथा 1929 ई. में कांग्रेस ने अपने लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वराज प्राप्ति को अपना उद्देश्य घोषित किया।[1]

लार्ड इर्विन का प्रमुख उद्देश्य अंग्रेजी साम्राज्य को सुदृढ़ता प्रदान करना था। लार्ड इर्विन ने भारतीय प्रदेशों विशेष रूप में उत्तर–पश्चिम सीमा प्रान्तों के प्रति जिस नीति को अपनाया, उसके लिए कुछ उद्देश्य और सिद्धान्त निश्चित किये। अंग्रेजी शासक के रूप में इर्विन का यह प्रमुख उद्देश्य रहा कि वह उत्तर–पश्चिम सीमा प्रान्तों में जहाँ कि अंग्रेजी साम्राज्य का प्रभाव विद्यमान था, उस प्रभाव को संगठित, सुचारू और स्थायी आधार प्रदान करे।[2]

इर्विन की यह भी नीति रही कि वह उत्तर–पश्चिम सीमाओं को सुरक्षित और प्रभावशाली बनाये जिससे उत्तर–पश्चिम सीमा के प्रान्तों में किसी देशी अथवा विदेशी शक्ति का प्रभाव स्थापित नहीं हो सके।[3] इर्विन का अन्य उद्देश्य उन प्रदेशों को जो अंग्रेज वायसराय के शासनकाल से अंग्रेजी साम्राज्य के प्रभाव में थे और बाद में स्वतन्त्र हो गये थे, उन्हें पुनर्विजित करके अंग्रेजी साम्राज्य में मिलाना था। जिन उत्तर–पश्चिम सीमा प्रान्तों में अव्यवस्था अथवा विद्रोहपूर्ण गतिविधियाँ बनी हुई थीं उसे नियंत्रित करना और उनका दमन करना था।

इर्विन का लक्ष्य अंग्रेजी साम्राज्य के अधीन राज्यों विशेष रूप में उत्तर–पश्चिम सीमा प्रान्तों के आंतरिक प्रशासन और शासन व्यवस्था की पुनःस्थापना एवं पुनःव्यवस्था करना था।[4] 1927 ई. में इर्विन के शासनकाल के अनतर्गत उत्तर–पश्चिम सीमाओं में निवास करने वाली खटक जाति के विद्रोह प्रारम्भ हो गये थे जिनका प्रमुख उद्देश्य अंग्रेजी साम्राज्य के शासन का विरोध करना था। इस जाति के लोग अंग्रेजी शासक के शासन के प्रभाव से स्वतन्त्र होना चाहते थे, जिसके कारण उनकी विद्राहात्मक गतिविधियाँ निरन्तर रूप में बनी हुई थी। इसके विरूद्ध अंग्रेजी शासक इर्विन के द्वारा सैनिक दमन की नीति को अपनाया गया था। इस सैनिक अभियान में अंग्रेजी सेनाओं को असफलता प्राप्त हुई। इस हेतु इर्विन ने इस समस्या को शांतिपूर्ण ढंग से हल करने का प्रयास किया। उन्हें पद व धन देकर संतुष्ट किया गया।[5] इर्विन के शासनकाल में उत्तर–पश्चिम सीमा प्रान्तों में अव्यवस्था और विद्रोह की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। इस स्थिति के फलस्वरूप इर्विन के द्वारा सैनिक अभियान की नीति को अपनाया गया था। इस पर युसुफजाई लोगों ने विद्रोह प्रारम्भ कर दिए थे। ये विद्रोह इस उद्देश्य को लेकर किये गये थे कि इन सीमावर्ती प्रान्तों के निवासी अंग्रेजी प्रभाव और नियंत्रण में नहीं रहना चाहते थे और उनका उद्देश्य स्वतंत्र रूप में अपने शासन को संचालित करना प्रमुख लक्ष्य बन गया था। यहाँ के युसुफजाई लोगों ने इर्विन के समक्ष विभिन्न प्रकार की कठिनाईयाँ उत्पन्न कर दी थीं। इस दृष्टि से इन जातियों ने सीमावर्ती क्षेत्रों में घुसपैठ, आक्रमक गतिविधियाँ अंग्रेजी शासक के बढ़ते हुए प्रभाव को रोकना आदि उत्तेजनात्मक गतिविधियाँ प्रारम्भ कर दी थी।

इस स्थिति के फलस्वरूप इर्विन उत्तेजित व आतंकित हुआ क्योंकि युसफजाईयों की इन गतिविधियों के कारण भारत की उत्तर–पश्चिम सीमा व अंग्रेजी साम्राज्य असुरक्षित हो सकता था। इसी प्रकार यह अव्यवस्था उत्तर–पश्चिम के अन्य प्रान्तों व अन्य शक्तियों को भी साम्राज्यवादी गतिविधि के लिए प्रोत्साहित कर सकती थी। इर्विन ने उत्तर–पश्चिम सीमा की ओर युसुफजाई लोगों के विद्रोह रोकने की दृष्टि से सैनिक अभियान की नीति को अपनाया था।[6]

युसुफजाई विद्रोहियों के विद्रोह को रोकने के लिए इर्विन ने सैनिक अभियान की नीति को महत्व दिया इसमें विभिन्न सीमावर्ती प्रदेशों के शासकों का भी सैनिक और समर्थनपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ था। इस प्रकार विद्रोही युसुफजाईयों को पराजित करके उन्हें अंग्रेजी सम्राट की अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया। इस सैनिक सफलता के पश्चात् इर्विन ने मीर जुमला को उत्तर–पश्चिम सीमा का सूबेदार नियुक्त कर दिया था, जिसने इस क्षेत्र में सफलतापूर्वक शासन किया और शान्ति व्यवस्था को बनाए रखा।[7]

इर्विन के शासनकाल में अफगानिस्तान के बजरिस्तान जिले में राजनीतिक अव्यवस्था और अराजकता का वातावरण उत्पन्न हुआ, क्योंकि यहां के निवासियों और अमीर ने अंग्रेजों की गतिविधियों का विरोध और उनके बढ़ते हुए प्रभाव को रोकने का प्रयास किया। परिणामस्वरूप इर्विन के शासनकाल में फरवरी, 1928 ई. में ब्रिटिश सेनाएं इस क्षेत्र के अमीर और क्षेत्रवासियों के विद्रोह का दमन करने के उद्देश्य से स्थल सेना और वायु सेना को भेजा गया। हवाई हमले की दृष्टि से फ्लाइंग ऑफिसर फूलर को भेजा गया। प्रारम्भिक रूप में ब्रिटिश सेनाओं को कठिनाई हुई, लेकिन स्थल सैनिकों ने बजरिस्तान के पूर्व में टोची नदी और उसके पड़ौसी गांवों पर अधिकार कर लिया।[8]

1928 ई. में इर्विन के शासनकाल में अफगानिस्तान स्थित डूरन्ड सीमा पर भी सैनिक गतिविधियाँ की गई। इसा कारण यह था कि यहां के सैनिकों और निवासियों के द्वारा सीमा का उल्लंघन किया गया और हस्तक्षेप की नीति अपनाई गई। इस स्थिति में अंग्रेजों ने महसूस किया कि वे इस स्थिति में उत्तर–पश्चिम सीमा में गतिविधियाँ नहीं कर सकेंगे और उनको बाधा हो रही थी। परिणामस्वरूप ब्रिटिश सेनाओं के द्वारा डूरेन्ड रेखा पर आक्रमण किया गया और उन्हें सफलता मिली।[9]

इर्विन के शासनकाल में अफगानिस्तान के ग्राम कनियार क्षेत्र में राजनीतिक अव्यवस्था का वातावरण उत्पन्न हुआ क्योंकि इस क्षेत्र के लोगों ने अफगान अमीर के विरूद्ध विद्रोह प्रारम्भ कर दिया था जो कि उसके कार्यों से संतुष्ट नहीं थे। इस स्थिति के फलस्वरूप अफगानिस्तान की सीमा पर आंतरिक अशांति और अव्यवस्था की स्थिति बन गयी थी। इस हेतु अंग्रेजी सरकार ने अपने कुछ सैनिक इस क्षेत्र में भेजे जो हवाई जहाज के माध्यम से इस क्षेत्र में उतरे जिन्होंने अफगानिस्तान की सीमा में विद्यमान इस क्षेत्र को विध्वंस किया और वहां कनियार वासियों के विद्रोह का दमन करके शांति व्यवस्था को स्थापित किया।[10]

इसी प्रकार अफगानिस्तान के ओमना (कटावाज) के निवासियों ने भी आंतरिक अव्यवस्था व विद्रोह का वातावरण उत्पन्न कर दिया था। इस स्थिति को नियंत्रित करने और अफगानिस्तान में शांतिपूर्ण वातावरण स्थापित करने के उद्देश्य से इर्विन में अपने सैनिक भेजे। इस सैनिक अभियान में कई अफगान विद्रोही जो कि ओमना के निवासी थे, जिनके नाम नराक, डोमान, जान मीर, जावर खान, शूकूर खान, अमीरूद्दीन प्रमुख थे, मृत्यु को प्राप्त हुए और उस क्षेत्र में अंग्रेजी सैनिकों के द्वारा शांतिपूर्ण वातावरण को पुनः स्थापित किया गया।

इर्विन के शासनकाल में उत्तर–पश्चिम सीमा के कोहात बन्नू और डेरा उस्माइन जिलों में अंग्रेजी सैनिकों को मार्च 1928 ई. तक रखे जाने की अनुमति प्रदान की गई थी जिससे उत्तर–पश्चिम सीमाओं को सुरक्षित बनाया जा सके।[11]

संदर्भ ग्रंथ

1. भारतीय राष्ट्रीय पुरातत्व अभिलेखागार, नई दिल्ली : "सीक्रेट फाइल" पृ. 29, वी.पी. सिंह, "आधुनिक भारत का इतिहास" पृ. 499.
2. भारतीय राष्ट्रीय पुरातत्व अभिलेखागार, नई दिल्ली : "सीक्रेट फाइल" पृ. 29, सी.सी. डेविस : "नॉर्थ वेस्ट फ्रन्टियर" पृ. 99, आर्थर सिविनसन्स : "नॉर्थ वेस्ट फ्रन्टियर" पृ. 57, आर.एल. शुक्ल : "आधुनिक भारत का इतिहास" पृ. 321, विद्याधर महाजन व सावित्री महाजन :"भारत 1526 के आगे" पृ. 409, एस. गोपाल :"ब्रिटिश पॉलिसी ऑफ इण्डिया" पृ. 91.
3. भारतीय राष्ट्रीय पुरातत्व अभिलेखागार, नई दिल्ली :"सीक्रेट फाइल" पृ. 29, मजूमदार, दत्त, रायचौधरीः "भारत का वृहत् इतिहास" पृ. 128, शर्मा, पावा :"आधुनिक भारत का इतिहास" पृ. 400
4. भारतीय राष्ट्रीय पुरातत्व अभिलेखागार, नई दिल्ली : "सीक्रेट फाइल" पृ. 29, वी.पी. सिंह, "आधुनिक भारत का इतिहास" पृ. 499.
5. भारतीय राष्ट्रीय पुरातत्व अभिलेखागार, नई दिल्ली : "सीक्रेट फाइल" पृ. 29, सी.सी. डेविस : "नॉर्थ वेस्ट फ्रन्टियर" पृ. 99, मजूमदार, दत्त, रायचौधरी : "भारत का वृहत् इतिहास" पृ. 128, शर्मा, पावा :"आधुनिक भारत का इतिहास" पृ. 400, आर्थर सिविनसन्स : "नॉर्थ वेस्ट फ्रन्टियर" पृ. 57, आर.एल. शुक्ल :"आधुनिक भारत का इतिहास" पृ. 321, विद्याधर महाजन व सावित्री महाजन : "भारत 1526 के आगे" पृ. 409, एस. गोपाल : "ब्रिटिश पॉलिसी ऑफ इण्डिया" पृ. 91.
6. भारतीय राष्ट्रीय पुरातत्व अभिलेखागार, नई दिल्ली : "सीक्रेट फाइल" पृ. 29, वी.पी. सिंह, "आधुनिक भारत का इतिहास" पृ. 499.
7. भारतीय राष्ट्रीय पुरातत्व अभिलेखागार, नई दिल्ली : "सीक्रेट फाइल" पृ. 29, सी.सी. डेविस : "नॉर्थ वेस्ट फ्रन्टियर" पृ. 99, मजूमदार, दत्त, रायचौधरी : "भारत का वृहत् इतिहास" पृ. 128, शर्मा, पावा :"आधुनिक भारत का इतिहास" पृ. 400, आर्थर सिविनसन्स : "नॉर्थ वेस्ट फ्रन्टियर" पृ. 57, आर.एल. शुक्ल :"आधुनिक भारत का इतिहास" पृ. 321, विद्याधर महाजन व सावित्री महाजन : "भारत 1526 के आगे" पृ. 409, एस. गोपाल : "ब्रिटिश पॉलिसी ऑफ इण्डिया" पृ. 91.
8. भारतीय राष्ट्रीय पुरातत्व अभिलेखागार, नई दिल्ली : "सीक्रेट फाइल" पृ. 29, वी.पी. सिंह, "आधुनिक भारत का इतिहास" पृ. 499.
9. भारतीय राष्ट्रीय पुरातत्व अभिलेखागार, नई दिल्ली : "सीक्रेट फाइल" पृ. 29, सी.सी. डेविस : "नॉर्थ वेस्ट फ्रन्टियर" पृ. 99, मजूमदार, दत्त, रायचौधरी : "भारत का वृहत् इतिहास" पृ. 128, शर्मा, पावा :"आधुनिक भारत का इतिहास" पृ. 400, आर्थर सिविनसन्स : "नॉर्थ वेस्ट फ्रन्टियर" पृ. 57, आर.एल. शुक्ल :"आधुनिक भारत का इतिहास" पृ. 321, विद्याधर महाजन व सावित्री महाजन : "भारत 1526 के आगे" पृ. 409, एस. गोपाल : "ब्रिटिश पॉलिसी ऑफ इण्डिया" पृ. 91.
10. भारतीय राष्ट्रीय पुरातत्व अभिलेखागार, नई दिल्ली : *"सीक्रेट फाइल"* पृ. 29, वी.पी. सिंह, *"आधुनिक भारत का इतिहास"* पृ. 499.
11. भारतीय राष्ट्रीय पुरातत्व अभिलेखागार, नई दिल्ली : *"सीक्रेट फाइल"* पृ. 29, सी.सी. डेविस : *"नॉर्थ वेस्ट फ्रन्टियर"* पृ. 99, मजूमदार, दत्त, रायचौधरी : *"भारत का वृहत् इतिहास"* पृ. 128, शर्मा, पावा : *"आधुनिक भारत का इतिहास"* पृ. 400, आर्थर सिविनसन्स : *"नॉर्थ वेस्ट फ्रन्टियर"* पृ. 57, आर.एल. शुक्ल : *"आधुनिक भारत का इतिहास"* पृ. 321, विद्याधर महाजन व सावित्री महाजन : *"भारत 1526 के आगे"* पृ. 409, एस. गोपाल : *"ब्रिटिश पॉलिसी ऑफ इण्डिया"* पृ. 91.